# बिनाका गीतमाला जादू था, नशा था

शशांक दुबे
104 एलिगेण्ट हाउसिंग सोसायटी, प्लॉट नंबर 18 डी, सेक्टर 14, सानपाड़ा, नवी मुंबई 400 705
मो. 9833920630

एक जमाना था, जब हर बुधवार की शाम 8 बजे सड़कों से ट्रैफिक गायब हो जाता था, दुनिया ठहर जाती थी, दक्षिण एशियाई देशों के तमाम फिल्म संगीतप्रेमी अपने रेडियो सेट से सट कर साँसे रोके बिनाका गीतमालामय हो जाते थे। बिनाका गीतमाला में हर हफ़्ते के सबसे ज्यादा लोकप्रिय सोलह गीतों को चढ़ते क्रम में सुनाया जाता था। गीतों की लोकप्रियता देश के प्रमुख म्यूजिक स्टोर्स से रेकॉर्डों की बिक्री और देश भर में फैले लगभग डेढ़ हजार रेडियो श्रोता संघों की राय के आधार पर तय की जाती थी।

यह दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र भारत का एक अनूठा लोकतांत्रिक प्रयोग था, जिसमें गीतों के हिट-फ्लॉप की वर्टिकल परेड की बागडोर श्रोताओं के हाथ में थी। झुमरी तलैया, बेगूसराय और भाटापारा जैसे एटलस के हाशिये पर धकेल दिए गए टप्पों से लगाकर जूनागढ़, राँची, इंदौर, हजारीबाग और भावनगर जैसे मध्यम शहरों

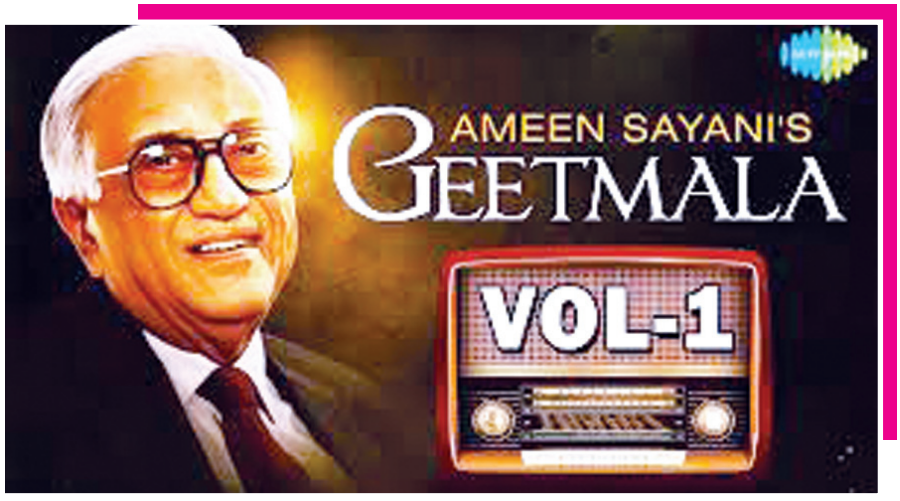


के फरमाइशी कार्यक्रमों के स्थायी फरमाइशकर्ताओं ने अपने-अपने शहरों में रेडियो श्रोता संघ बना लिए थे। यही श्रोता हर हफ़्ते अपनी बैठकें आयोजित कर तत्कालीन गीतों पर लंबे बहस-मुबाहिसे के बाद आम सहमति से लोकप्रियता का क्रम देते थे और उस सूची को तत्काल रेडियो सिलोन रवाना कर देते थे। इन्हीं सूचियों का समेकन करने के बाद गीतों का फाइनल काउंट डाउन दिया जाता था। रेडियो श्रोता संघ की ताकत को शंकर जयकिशन और लक्ष्मीकांत प्यारेलाल ने बखूबी पहचाना था। वे न सिर्फ इन श्रोता संघों के सालाना जलसों में शिरकत करते थे, बल्कि उनके छमाही बुलेटिन के प्रकाशन में अपनी ओर से आर्थिक सहयोग भी करते थे। उस जमाने में गायकों और संगीतकारों की हैसियत दिलीप, शम्मी, देव की ही तरह सेलिब्रिटी की थी और इन संगीतकारों के दोस्ताना व्यवहार का असर यह होता था कि गीतों की पायदान तय करते वक्त इन संगीतकारों के प्रति श्रोता संघों में साफ़्ट कार्नर होता था। यही कारण है कि बिनाका गीतमाला में साठ के दशक में जहाँ शंकर-जयकिशन का वर्चस्व रहा, वहीं सत्तर के दशक में यह ताजपोशी लक्ष्मी-प्यारे को मयस्सर हुई। श्रोता संघ की ताकत को बतलाने के लिए इतना जानना ही काफी होगा कि बिनाका गीतमाला के 1961 के सालाना कार्यक्रम में सबसे बड़ा हिट गीत क्या हुआ हो मुझे क्या हुआ (फिल्म -जिस देश में गंगा बहती है) था, जबकि इसी फिल्म के शेष गीतों होठों पे

> “
> बॉबी के दस हजार रेकॉर्ड एक ही दिन में बिके। अगले हफ़्ते बॉबी के गीत हम तुम इक कमरे में बंद हों की सीधे ही तीसरी पायदान पर एंट्री हुई और तीन हफ़्तों में यह टॉप पर पहुँच गया। बिनाका की लोकप्रियता में सबसे बड़ी भूमिका इसके प्रस्तुतिकार अमीन सयानी की थी। बहनों और भाइयों, जुमले से अपने कार्यक्रम की शुरुआत करने वाले अमीन सयानी गीतों के क्रम को इतने रहस्यमय तरीके से पेश करते थे कि श्रोता घंटे भर के लिए उन्हीं का होकर रह जाता था।